आपातकाल में सृजन फुलवारी

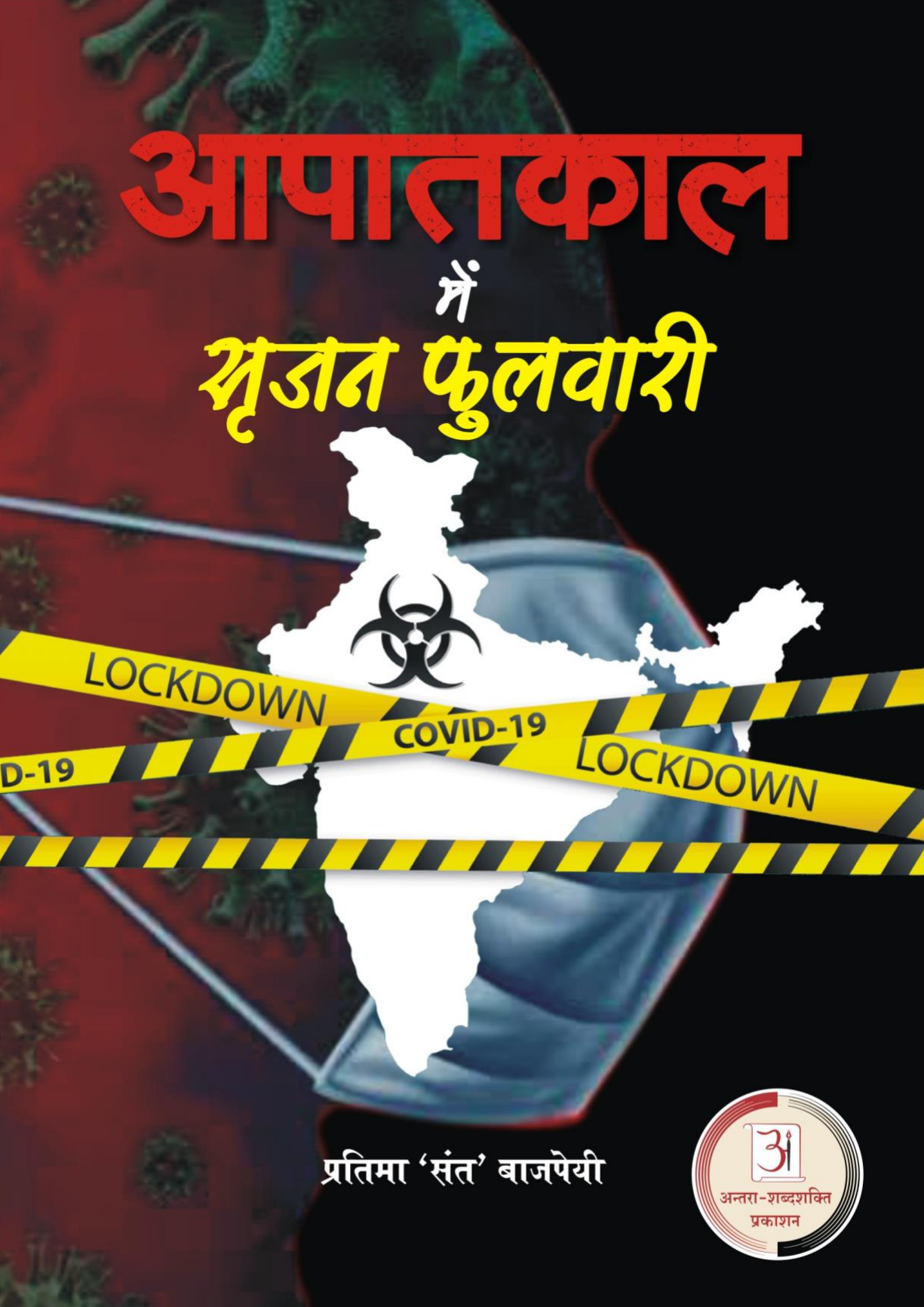

प्रतिमा 'संत' बाजपेयी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रतिमा "संत" बाजपेई

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-187-9

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, प्रतिमा "संत" बाजपेई

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY PRATIMA SANT BAJPEYI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना)covid (19जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीपटीना सोनी-, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	हमसफर	6
2.	माटी के दीप	7
3.	करवा चौथ	8
4.	मौन	9
5.	उदासीनता	10
6.	राष्ट्र देवो भव	11
7.	वतन को किसकी नजर लगी है	12
8.	संस्कार	13
9.	आस्तीन के साँप	14
10.	कान्हा	15
11.	प्रियतम	16
12.	विपदा	17
13.	कैद	18
14.	दीप जलाओ	19
15.	बाहर न निकल	20
16.	उपहार	21

हमसफर

जीवन के अगम पथ पर
जब साथ तुम्हारा हो

अनजानी अमित राहें
पल पल उजियारा हो

सुख दुख में मेरे साथी
मेरा तुम ही सहारा हो

मझधार फंसी हो नैया
मिलता न किनारा हो

मुश्किल बाधा हर ले
हमदम जो हमारा हो

पथरीले पथ दुर्गम
मंजिल न गवारा हो

तय सफर सुगम होवे
जो हमसफर हमारा हो

माटी के दीप

दिए जलाओ माटी के, मेहनत का मोल उन्हें दो।
अंधेरा जहाँ गरीबी का है, दो मीठे बोल उन्हें दो।

उनके घर भी दिए जलेंगे, सबके घर होगी दीवाली।
मीठा फुग्गे और फटाके, मिल जुल हो खुशहाली।

बच्चे जो मुस्काएँ उस, घर खुशी मनेगी भारी।
दीप बनाने की करते हैं, महिनों से वो तैयारी।

मिट्टी के दीपों से जगमग रोशन घर को कर दो।
ले लो दीपक उस बच्चे से,खुशियाँ झोली में भर दो।

बैठा तकता राह देखता, दीप बेचने को वह भाई।
नहीं बिके दीपक तो उसके, खुशियाँ फिर कैसे आई।

दीपावली खुशियों का है, त्यौहार समझ लेना मन में।
जिसने दीप बनाया है तुम, दीप जलाओ उस आँगन में।

सहमें डरे हुए वो बच्चे, हम सब कसक करें उन पर।
फटेहाल बेहाल जिंदगी, खुशियाँ आएँ फिर उस घर।

करवा चौथ

करूँ पूजा मैं गौरी की।
गजानन हरना मेरे तम।।
तुम्ही तो विघ्न हर्ता हो।
कृपा कर कष्ट हरलो मम।।

कृपा करना हे गौरी माँ।
चमक जीवन की हो शबनम।।
सुखी परिवार हो मेरा।
खुशी का बढ़ता जाए क्रम।।

ये करवा चौथ का व्रत है।
करूँ प्रिय के लिए नित्यम्।।
चाँद को देख कर, पूजा।
तुम्हीं को मैंनें है हरदम।।

खिला चेहरा तेरा निरखूँ।
दूर हो जाते हैं हर गम।।
करूँ जल चाँद को अर्पण।
नजर आते हो मुझको तुम।।

एक चंदा आसमां पर।
दूजे तुम हो जी चंदा सम।।
करूँ श्रँगार बनूँ दुल्हन।
पूजन थाल रख के सनम।।

मौन

उर अन्तर का ब्रम्हनाद
भूचाल मचाता मस्तक में

उर की सुनू या जग की
झंझावातों की दस्तक में

मौन हुई वो ब्रम्हलीन तब
ज्ञान चक्र का ध्यान किया

कुछ भावी जिज्ञासाओँ का
अन्तर मन ने जान लिया

संयम नियम शाँति स्थिर मन
साधक बनी मौन व्रत धारी

जब से जन्म हुआ प्रथ्वी पर
अगन ,तपन से तपती नारी

उदासीनता

इतनी न हो उदासीनता
कि घर बेरंग हो जाए

नजर डालो जहाँ यारा
न कोई भी नजर आए

करो संघर्ष जीवन में
बहारे फिर चली आए

कर्मपथ में कदम रख दो
नहीं कोई गम कभी आए

अगर उत्साह हममें है तो
उत्सव भी चले आए

कूके मोर मधुवन में
कोयलिया रागिनी गाए

कि जब चाहो दिवाली हो
औ होली रंग बरसाए

अरे सजना सलौना घर
कर्म पूजा से खिल जाए

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र देवो भव कहें तो होता है अभिमान।
देश अपना स्वर्ग से भी बढ़ के इसकी शान।।

गंगा यमुना का है संगम भारत की पहचान।
बन कर प्रहरी खड़ा हिमालय यही हमारा मान।।

हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई आपस में सब भाई।
भारत का संगीत निराला धुन दुनियाँ में छाई।।

वंदे मातरम् वंदे मातरम् हम सब हिंदुस्तानी।
देश हमारा सबसे न्यारा इसका न कोई शानी।।

वतन को किसकी नजर लगी है

नही प्रेम आपस में कैसी खलभली है।
जला देश शोलों से खूनी गली है।।

गोली चलाते तमंचे दिखाते सभी हैं।
जो आपसी भाई चारा बताते कभी हैं।।

हाथों में पत्थर सर पै लहू है।
न एक दूसरे का अदब ये कहू है।।

अगन है लगी ये नहीं दिललगी है।
बहारों का मौसम अनल क्यों लगी है।।

बताओ जरा क्यों दहशती ये गली है।
वतन को किसकी नजर ये लगी है।।

संस्कार

जिससे न होता कोई विकार
हर मन का सपना हो साकार

नित उठ ईश्वर का ध्यान करें
माँ पिता को फिर हम नमन करें

आगंतुक हो ईश्वर समान
छोटे बड़ों का रखना है ध्यान

गुरु वाणी में विश्वास करो
अपनी चादर में वास करो

बच्चे, बूढ़े, बिटिया, बहिना
इन सबकी रक्षा है करना

है क्षमादान भी संस्कार
संस्कृति भी अपनी सकार

भारत की ऐसी संसकृति है
न ही संस्कारों में विकृति है

आस्तीन के साँप

जो शंकर के गल हार बने
शिवभोले पहने माला है

जो परम शक्ति शेषावतार
लक्ष्मीपति का रखवाला है

बचपन में नटखट कान्हा ने
संग सखा गेंद तब खेला है

गिर गई गेंद यमुना गहरी
कूदे प्रभु लग गया मेला है

विषधर बैठा था यमुना में
सरिता दूषित कर डाला है

था काम भक्त की रक्षा का
ये कालिया नाथने वाला है

ये पूज्यनीय ये वंदनीय
विषधर न मन से काला है

विषधर से ज्यादा खतरनाक
आस्तीनों में जिनको पाला है

इनको तौला न कभी करो
"आतीनों के साँपों" से

रिस्तों से खेल रहे होली
इन सा न कोई काला है

कान्हा

दीवाना, दीवाना, दीवाना, हमको
बना गई सूरतिया तेरी कान्हा

अरे तू वंशी मधुर बजावे
और सखियों को भरमावे

दधि लूट लूट कर खावे
अजी मटकी फोड़ गिरावे

तेरी यही अदा हिय भाई रे
मन हो गया तेरा दिवाना

दीवाना हमको बना गई
सूरतिया तेरी कान्हा

ब्रज धूम मची है होली
गोपाल सखा की टोली

सखि बैठी करें ठिठौली
ब्रषभानु लली फिर बोली

मनमोहन को रंग दो आज
रे बिन रंगे आज न जाना

दीवाना हमें बना गई रे
सूरतिया तेरी कान्हा

प्रियतम

प्रियतम आन मिलो सजनी से
कैसी चंचल चली बयार

बहे बयार बसंती ऐसे
नाचे कोई मय पी के

छोटू बिट्टू आँख न भाए
लगे न जिय बिन पिय के

प्रियतम आन मिलो सजनी से
कैसी चंचल चली बयार

जब से गए परदेश पिया तुम
याद न मेरी आई

खुद आए न पतियाँ भेजी
क्यों मेरी सुध बिसराई

प्रियतम आन मिलो सजनी से
कैसी चंचल चली बयार

सेमर टेशू फूले वन में
फूल रही कचनार

फूलों की मनभावन खुश्बू
थिरक रही चहुँ ओर

ओ प्रियतम आन मिलो सजनी से
कैसी चंचल चली बयार

विपदा

मुश्किल की घड़ी आई
हमें साथ निभाना है
कोरोना वायरस को
धीरज से भगाना है

सब साथ रहो भाई
न बाहर जाओ तुम
दूरी भी सामाजिक हो
हमें हाथ धुलाना है

रखना भी है सफाई
ना हाथ मिलाओ तुम
आदत हो नमस्ते की
डाॅक्टर को दिखाना है

विपदा है बड़ी आई
संकट में आज हैं हम
प्रधान जी जो कहते
हमें साथ निभाना है

कैद

कैद दिल में किया
फिर बन गई दीवानी मैं

दिल से न जाने दूँ
कभी भूल से नादानी में

बंदी मुझको बनाने
वो भी सिर फिरा आया

प्यार उसने किया
मन को मेरे वो भी भाया

गीत उसने लिखा
और लिख दिया कहानी में

कैद दिल में किया
फिर बन गई दीवानी मैं

नेह और प्रेम का
अनमोल अजी ये बंधन

पूजा की थाल
ईश चरणों है ये चंदन

साथ रहना सभी
दूर रहना नहीं नादानी में

कैद दिल में किया
फिर बन गई दीवानी मैं

दीप जलाओ

मेरे देश वासियो दीपक जलाओ
कोराना वायरस यहां से भगाओ

देश के वो शुभचिंतक जिनने
जनता से है विनय किया

दीप जलाने सब सहमत हैं
जिसे मोदी जी ने मनन किया

पाँच अप्रेल रात्रि नौ बजे आओ
भूल न जाना दीपक जलाओ

अपनी संस्कृति करो प्रणाम
सब को सनमति दो श्री राम

कोरोना से सब को बचाओ
सामाजिक दूरी को बनाओ

दीप पुँज की है अद्भुत बेला
दीपों का अब लगेगा मेला

भाई बहिना सब मिल आओ
फिर से दीपावली मनाओ

आज रात्रि जब दीप जलेंगे
मन से मन के द्वार खुलेंगे

यही समय है देश बचाओ
मधुर सुमंगल गीत सुनाओ

बाहर न निकल

दिल में दुविधा है मेरे
आज मैं करती हूँ गल

वायरस फैल रहा है बहुत
तू घर से बाहर न निकल

न हाथों को मिला जोड़ ले
हाथों को धोता रह हर पल

न हाथों को मिला जोड़ ले
हाथों को धोता रह हर पल

लॉकडाउन है जब तक
भीड़ में बाहर न निकल

दूरी अपनों से बना कर
याद रख इतनी सी गल

दुविधा मन में मेरे आज
कल तू बाहर न निकल

मिला आदेश उसे मान
लगा तू अपनी न अकल

बाहर न निकल बाहर न
निकल बाहर न निकल

उपहार

प्रकृति का उपहार ,मानव
धीरता से पाइए

दे रही वसुधा उसे ही
बाँट मिल कर खाइए

संतुलन बिगड़े नहीं
ऐसा काम करना चाहिए

वृक्ष को काटे न कोई
बहु पेड़ रोपना चाहिए

नदियों का चिंतन करो
हर बूँद बचना चाहिए

व्यर्थ पानी न बहाओ
शहर गाँव में गाइए

जानवर पशु पक्षि रक्षा
बीड़ा आप उठाइए

दे रही उपहार अवनि
मोती जान बचाइए

प्रकृति तो है मित्र भाई
नजराना फिर अपनाइए

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

मैं अंतरा शब्दशक्ति को नमन करती हूँ परमारथ में जिसने अनेकों कार्य किए हैं रचनाकारों की गरिमा को ध्यान में रखते हुए आदरणीय प्रीति सुराना जी के प्रखर नेत्रत्व में समिति ने नवाँकुर रचनाकारों का मनोबल बढ़ाया है। रचनाकारों की परीक्षा अचानक आए विषय से नित्य ही होती है और परीक्षा में पास होने वाले अनेक मोती आकाश की बुलंदी को छू रहा है आज समाज को जरूरत है अंतरा शब्दशक्ति जैसे अनेकों मिशन की जिससे हमारे राष्ट्र निर्माण के लिए सद्साहित्य का सृजन अनवरत होता रहे।

समिति में अनेकों ऐसे आयोजन होते हैं, जिससे छोटे से छोटा नवाँकुन रचनाकार भी आगे आने से नहीं घबराता जब नए रचनाकारों की रचनाओं को अंतरा शब्दशक्ति द्वारा पेपरों में दिया जाता है और उसका लेखक अपनी रचना को पढ़ता है उसका उत्साह कई गुना बढ़ जाता है और वह नई ऊर्जा के साथ सहज ही सद्साहित्य का सृजन करता है जो राष्ट्र के गौरव की बात है आदरणीय प्रीति सुराना जी का अथक प्रयास ही हजारों लाखों रचनाकारों की लेखनी में निखार आया है अंतरा शब्दशक्ति साहित्यिक नव सृजन की नीव का पत्थर है।

रचनाकार

प्रतिमा 'संत' बाजपेयी

मंडला (म.प्र.)

Mobile - 9179949737

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-187-9

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/